5.2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A part I paper II
Indian political thought
Topic - Gopal Krishna Gokhale - 1
Lecture - 33

## गोपाल कृष्ण गोखले - 1

गोपाल कृष्ण गोखले एक महान देशभक्त, इतिहासकार और अर्थशास्त्र के आचार्य थे। वे महादेव गोविन्द रानाडे के योग्यतम शिष्य, महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु थे। महात्मा गाँधी ने श्री गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु मान लिया क्योंकि उनमें वे सभी गुण विद्यमान थे जो एक व्यक्ति को सन्त बना देते है और उनकी सेवा, त्याग, सज्जनता, उदारता सहृदयता तथा देशभक्ति पराकाष्ठा को पहुँच गयी थी। वे तो वास्तव मे राजनीति में छल, कपट और षड्यन्त्र को कोई भी स्थान देने के लिए तैयार नही थे और इसका आध्यात्मी -करण करना चाहते थे। उनकी असीम सेवा के कारण ही महात्मा गाँधी ने राजनीतिक क्षेत्र में सदा उनका आदर्श अपने सामने रखा। गांधीजी उनको सदा महात्मा गोखले कहकर पुकारते थे।

गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915) का जीवन प्रारम्भ से ही सरल और संयमशील रहा तथा उनके बौद्धिक गुण उनके भावी उज्ज्वल जीवन का संकेत देते रहे। श्री गोखले ने सन् 1889 में कांग्रेस में प्रवेश किया। वास्तव मे

से प्रतिकूल समझौता उन्हें पसन्द न था। गोखले ने भारत सेवक समिति की स्थापना करके एक बड़ा रचनात्मक काम किया। यह ऐसे राजनीतिक कार्यकर्ताओं की एक संस्था थी जिन्होंने नाममात्र के वेतन पर मातृभूमि की सेवा करने का प्रण लिया।

गोखले एक व्यावहारिक आदर्शवादी और राजनीति के क्षेत्र में सच्चे उदारवादी थे। उनकी मान्यता थी कि कांग्रेस को भारतीय प्रशासन में धीरे-धीरे सुधारों के लिए आन्दोलन करना चाहिए। अंग्रेजों की न्यायप्रियता में उन्हें निष्ठा थी और उनका कहना था कि अंग्रेज उस समय भारत को अविलम्ब स्वशासन दे देंगे जब उन्हें विश्वास हो जायेगा कि भारतीय इसके योग्य हैं। पर जीवन के अन्तिम वर्षों में गोखले को इस दिशा में निराशा होने लगी। गोखले का यह भी विश्वास था कि देश का पुनर्निर्माण राजनीतिक उत्तेजना की आँधी से नहीं बल्कि धीमे-धीमे ही हो सकता है। इस धीमी प्रक्रिया में समस्या का वास्तविक हल था - अंग्रेजों की प्रकृति के श्रेष्ठ पक्ष पर विजय पाना और इस प्रकार उनकी सहायता एवं समर्थन प्राप्त करना। लॉर्ड मॉर्ले ने गोखले का मूल्यांकन करते हुए कहा कि उनका अस्तित्व एक राजनीतिज्ञ का मस्तिष्क था और उनमें शासन के उत्तरदायित्व की भावना व्याप्त थी। वे उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैकियावली की भाँति किसी भी साधन (नैतिक या अनैतिक का ध्यान न रखते हुए) को ठीक नहीं समझते थे, प्रत्युत उनके

...जाता था। गोखले नौकरशाही के विरुद्ध थे, और जनतन्त्र सरकार के समर्थक। उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन का समर्थन किया और यह माँग की कि भारत में भारतीयों को सरकारी सेवाओं में प्रवेश मिले, निर्वाचन प्रणाली का प्रारम्भ हो तथा सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाय। गोखले ने भारत के सुधारों की एक योजना तैयार की जिसे "गोखले की राजनीतिक वसीयत" कहा जाता है। यह उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई। गोखले के अन्तिम दिन शिक्षा प्रचार और देश सेवा में बीते।

गोखले का राजनीतिक दर्शन
(Political philosophy of Gokhale)

(1) ब्रिटिश उदारवाद, में विश्वास, प्रजातान्त्रिक आधार पर निर्मित साम्राज्यवाद की आलोचना.
भारत के तत्कालीन उदारवादियों को ब्रिटिश शासन में मुख्यतः दो कारणों से गहरा विश्वास था - प्रथम, ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता का विचार एवं द्वितीय, ब्रिटिश शासन की लोक-तान्त्रिक संस्थाओं तथा शिक्षण-पद्धति के प्रति आकर्षण। उदारवादी चिन्तन का यह विश्वास गोपाल कृष्ण गोखले में मुखरित हुआ।

(2) स्वशासन के समर्थक - गोपाल कृष्ण गोखले ने भारत के लिए स्वशासन या अधिराज्य स्थिति (Dominion status) की माँग की। उन्होंने कहा कि भारत को वही दर्जा प्राप्त होना चाहिए जो ~~कनाडा~~ कनाडा तथा आस्ट्रेलिया जैसे अन्य अधिराज्यों (Dominions) को प्राप्त है। वे भारत का ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध तोड़ना नहीं चाहते थे।

केवल ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर रहकर ही प्राप्त की जा सकती है।

3) गोखले ब्रिटिश शासन को एक वरदान मानते थे

वे ब्रिटिश शासन को एक वरदान मानते थे, इसके कई कारण थे। पहला कारण तो यह था कि अंग्रेजी राज के आने से पूर्व इस देश में अशान्ति फैली हुई थी। वे कहते थे कि ब्रिटिश राज्य को चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न समझे परन्तु एक बात तो निर्विवाद एवं सत्य है कि अंग्रेजों ने यहाँ आकर शान्ति स्थापित की है।

1) संवैधानिक उपायों की श्रेष्ठता में दृढ़ विश्वास

गोपाल कृष्ण गोखले यह मानते थे कि तत्कालीन परिस्थितियों में संवैधानिक उपाय आन्दोलनात्मक तरीकों से अधिक श्रेष्ठ है, संवैधानिक आयों से उनका यह अभिप्राय था कि अंग्रेज शासकों को अपने कष्ट दूर करने के लिए आवेदन-पत्र दिये जाये और भारत की जनता के कष्टों का उनको भलीभांति ज्ञान कराया जाय। उनका सरकार की रचनात्मक आलोचना और निष्क्रिय प्रतिरोध में पूरा विश्वास था। वे शान्ति को भंग किये बिना जलसे और जुलूसों के द्वारा जनमत को प्रबल बनाने का भी समर्थन करने के लिए तैयार थे क्योंकि इससे ब्रिटिश शासकों पर दबाव पड़ता था।

(5) ... की आध्यात्मीकरण — गोखले राजनीति में छल, कपट तथा जोड़-तोड़ करने के पक्ष में नहीं थे। वे ब्रिटिश शासन के शत्रुओं से के विरुद्ध घृणा फैलाने और षड्यन्त्र करने का समर्थन करने के लिए भी तैयार नहीं थे। इसका कारण यह था कि वे एक अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुचित साधनों को अपनाने के लिए तैयार नहीं थे।

(6) <u>पाश्चात्य शिक्षा में दृढ़ विश्वास</u> — गोखले ने दूसरे सम्मेलन में बोलते हुए कहा था: " 1833 में इंगलैण्ड को दो मार्गों में से एक को चुनना था। एक तो यह था कि भारत की जनता को अज्ञान तथा अन्धविश्वास के गड्ढे में ही पड़े रहना दिया जाय और दूसरा था, उसके लिए पाश्चात्य ज्ञान के द्वार खोल देना और ऐसा करके धीरे-धीरे स्वयं अपनी उदार परम्पराओं के स्तर तक उठाकर ले आना। अपनी उदारतम प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर उसने इस देश के लोगों को पाश्चात्य ज्ञान प्रदान करने का निर्णय किया।"

7) <u>हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा राष्ट्रीय दृढ़ता के समर्थक</u> —
श्री गोपाल कृष्ण गोखले हिन्दू-मुस्लिम एकता के महान समर्थक थे। वे कहते थे कि यदि भारत की इन दो महान जातियों में अनेक प्रकार के मतभेद बने रहे, तो भारत का भविष्य अन्धकारमय है। इसलिए वे हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को परामर्श देते थे कि उन्हें सहिष्णुता तथा संयम से काम लेना चाहिए और अपने मतभेदों पर बल देने की अपेक्षा

चाहिए। वे हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न को धार्मिक दृष्टि से देखते थे और कहते थे कि कोई भी धर्म एक-दूसरे से वैर करना नहीं सिखाता है, इसलिए दोनों धर्मों के अनुयायियों को एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।

(8) <u>मानव प्रगति के लिए स्वतन्त्रता में विश्वास</u>-

गोखले स्वतन्त्रता के महान समर्थक थे, उनका यह दृढ़ विश्वास था कि मानव जाति की आमतौर पर और पराधीन जाति की खास तौर पर प्रगति स्वतन्त्रता के बिना नहीं हो सकती है। इसलिए वे अपने देश के लिए तत्कालीन परिस्थितियों में जितनी भी अधिक से अधिक स्वतन्त्रता सम्भव थी, चाहते थे। उन्होंने लॉर्ड कर्जन के प्रशासन की कटु आलोचना की क्योंकि उसने कुशलता के लिए स्वतन्त्रता का बलिदान कर दिया था, गोखले ने इसी आधार पर लॉर्ड कर्जन के भारतीय विश्वविद्यालय विधेयक (Indian Universities Bill) का विरोध किया क्योंकि इससे अंग्रेजों का अनावश्यक नियन्त्रण विश्वविद्यालयों पर बढ़ता था। गोखले ने जीवन भर अंग्रेजों के दमनकारी कानूनों का विरोध किया।